संपादकीय

पहले आम को राहत

आज वैश्विक आर्थिक परिदृश्य तेजी से अनिश्चितता के भंवर में फंसता नजर आ रहा है। अमेरिका-इस्राइल व ईरान के बीच जारी संघर्ष से उपजा भू-राजनीतिक तनाव, ऊर्जा की कीमतों में अप्रत्याशित वृद्धि, बाधित व्यापार मार्ग से प्रभावित आपूर्ति श्रृंखला भारतीय अर्थव्यवस्था के लिये नई चुनौतियां खड़ी कर रही है। ऐसे में देश के लिये प्राथमिकता केवल विकास की गति बनाये रखना ही नहीं होनी चाहिए। सरकार का दायित्व है कि आम लोगों को महंगाई की मार से बचाने के लिये व्यावहारिक कदम भी उठाये। दरअसल, भारत के सामने केवल मध्यपूर्व में जारी संघर्ष से उपजा संकट ही नहीं है, बल्कि अंदरूनी मोर्चे पर भी कई तरह की दिक्कतें पैदा हो रही हैं। हाल ही में केंद्रीय बैंक ने देश में मानसून में कमी की आशंका जतायी है। ऐसा अल-नीनो के प्रभाव के चलते पैदा होने वाले विषम हालातों के चलते कहा गया है। जिसके चलते आगामी कुछ माह में खाद्य पदार्थों की कीमतों में वृद्धि की आशंका भी व्यक्त की जा रही है। ऐसे में महंगाई में कमी आने की सूरत नजर नहीं आती। देश के कुछ अर्थशास्त्रियों का मानना है कि फिलहाल सरकार की प्राथमिकता आर्थिक विकास में वृद्धि ही है। जिसके चलते आशंका जतायी जा रही है कि इससे नागरिकों पर महंगाई का दबाव बढ़ सकता है। निस्संदेह, अर्थव्यवस्था में सुधार होना चाहिए, लेकिन वक्त की नजाकत को देखते हुए आम आदमी को महंगाई से राहत देना बेहद जरूरी है। अन्यथा आम लोगों का जीवन-यापन और अधिक कष्टकारी भी हो सकता है। यही वजह है कि कुछ अर्थशास्त्री मानते हैं कि सरकार आर्थिक विकास की प्राथमिकताओं व महंगाई नियंत्रण के प्रयासों के बीच संतुलन साधने का प्रयास करे। लेकिन पिछले दिनों पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में कई बार की वृद्धि के बाद व्यावसायिक व घरेलू एलपीजी के दामों का बढ़ना, लोगों की चिंता बढ़ाने वाला है। जाहिर बात है कि इस वृद्धि से पहले ही महंगाई से जूझते लोगों का बजट और गड़बड़ा जाएगा। निस्संदेह, पेट्रोलियम पदार्थों की कीमत में वृद्धि के बाद कुकिंग गैस के दामों की वृद्धि आम आदमी का बजट बिगाड़ने वाली है। फलत: लोगों की क्रय शक्ति कम हो रही है। वहीं आर्थिकी में मुद्रास्फीति का दबाव बढ़ने की आशंका है। इस उथल-पुथल भरे वैश्विक परिदृश्य में कुछ कारक देश की अर्थव्यवस्था को संबल देने वाले भी हैं। देश में घरेलू मांग मजबूत है, संरचनात्मक विकास में निवेश जारी है। वहीं तेजी से बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था हमारी ताकत भी है। जिससे हम एक सीमा तक वैश्विक चुनौतियों का मुकाबला कर सकते हैं। लेकिन एक कड़वी सच्चाई यह भी है कि कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें हमारे आयात बिलों पर दबाव बढ़ा रही हैं। जिसका प्रभाव रुपये पर भी बढ़ते दबाव के रूप में सामने आया है। हालांकि, विदेशी संस्थागत निवेशकों को लुभाने के लिये केंद्रीय बैंक प्रयासरत है, लेकिन बाजार के पटरी पर आने में कुछ वक्त अवश्य लगेगा। आरबीआई का विश्वास है कि निवेश नियमों में ढील से पूंजी के प्रवाह को प्रोत्साहन मिलेगा। केंद्रीय बैंक की प्राथमिकताओं में आर्थिक स्थिरता कायम करना, रुपये को संबल देना और देश की वित्तीय प्रणाली में पर्याप्त तरलता बनाये रखना भी है।

सोने के आयात को रोकने की कवायद

गौरतलब है कि देश में विभिन्न प्रकार के ईटीएफ का कुल पूंजीगत मूल्य 1.9 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच चुका है। आज जो भी सोने में निवेश करना चाहे, वो ईटीएफ में पैसा लगा सकता है, और सोने में मूल्य वृद्धि का लाभ ले सकता है।

पिछले लगभग 3 माह से अमरीका-इजरायल और ईरान के बीच चल रहे युद्ध के बाद कच्चे तेल की आपूर्ति में बाधा आने और कीमतों में लगातार वृद्धि होने से देश का आयात-निर्यात का असंतुलन पहले से भी ज्यादा विकट हो गया है। ऐसे में भारतीय रुपया तेजी से कमजोर होकर 95 से 97 रुपए प्रति डालर के आसपास चल रहा है और कई विशेषज्ञ तो यह आशंका भी व्यक्त कर रहे हैं कि यह 100 रुपए प्रति डालर की सीमा भी लांघ सकता है। ऐसे में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश की जनता से यह भावुक अपील की है कि वे न केवल पेट्रोलियम पदार्थों के उपभोग को कम करें, बल्कि विदेशी मुद्रा बचाने हेतु सोने की खरीद को भी कम करे और जरूरत से ज्यादा विदेश यात्राएं भी न करें। हालांकि सोने के आयात पर समय-समय पर आयात शुल्क बढ़ाने से लेकर मात्रात्मक नियंत्रण लगाने तक, कई अंकुश लगाए जाते रहे हैं, लेकिन शायद यह पहली बार है कि देश के किसी प्रधानमंत्री ने लोगों से सोने की खरीद घटाने के लिए अपील की है। भारत में लोगों का सोने की खरीद के प्रति आकर्षण कोई नई बात नहीं है। हजारों वर्षों से देश के लोग आभूषणों के रूप में सोने की भारी खरीद करते रहे हैं। इसलिए प्रधानमंत्री की अपील से कुछ लोगों को ऐसा लगा कि शायद प्रधानमंत्री आभूषणों की खरीद पर अंकुश लगाने की अपील कर रहे हैं। क्या आज सोने की सारी मांग आभूषणों के लिए है? इस संदर्भ में हमें समझना होगा कि पिछले लगभग दो दशकों से देश में आभूषणों के रूप में सोने की खरीद में भारी कमी आई है, लेकिन फिर भी देश में सोने का आयात लगातार बढ़ता जा रहा है। इस गुत्थी को सुलझाने के लिए हमें वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल के आंकड़ों को देखना और समझना पड़ेगा। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2026 की पहली तिमाही में भारत में कुल सोने का आयात

150 टन रहा, लेकिन आभूषणों के लिए सोने की मांग सिर्फ 66 टन ही थी। पूर्व में विश्व स्तर पर आभूषण के लिए सोने की मांग 50 प्रतिशत से ज्यादा होती थी, लेकिन यह लगातार घटते हुए वर्ष 2025 तक मात्र 31 प्रतिशत ही रह गई। वर्ष 2025 में पहली बार निवेश के लिए सोने की मांग 2175 टन तक पहुंच गई जो आभूषणों हेतु सोने की मांग से भी ज्यादा थी। यानी कहा जा सकता है कि देश और विश्व में सोने की मांग इसलिए नहीं बढ़ रही कि स्वर्ण आभूषणों की मांग बढ़ रही है, बल्कि क्योंकि लोग अब सोने को निवेश के रूप में भी रखना चाहते हैं। यही नहीं भारतीय रिजर्व बैंक सहित अधिकांश बड़े देशों के केंद्रीय बैंक भी अपने विदेशी मुद्रा भंडारों में सोने का अनुपात बढ़ाते जा रहे हैं। गौरतलब है कि सितंबर 2025 से लेकर अब तक भारतीय रिजर्व बैंक के पास विदेशी मुद्रा भंडार में सोने का हिस्सा 13.92 प्रतिशत से बढक़र 16.85 प्रतिशत हो चुका है। यहां एक बात स्पष्ट करना जरूरी हो जाता है कि हाल ही में कुछ ऐसे समाचार भी आए कि रिजर्व बैंक ने अपना काफी सोना बेच दिया है, लेकिन 3 जून को जारी स्पष्टीकरण के अनुसार भारतीय रिजर्व बैंक के पास सोने के भंडार 880.52 टन पर बरकरार है। पिछले लंबे समय से देश में सोना बड़ी मात्रा में आयात होता रहा है। लेकिन इस संदर्भ में खास बात यह है कि जीडीपी में वृद्धि के साथ-साथ सोने का आयात भी बढ़ता रहा है। 1991 के बाद सोने के आयात की प्रवृत्ति पहले से ज्यादा बढ़ी है।

इसका कारण यह भी रहा कि 1991 से पूर्व सोने के आयात पर भारी नियंत्रण था और न केवल ऊंचे आयात शुल्क लगाए जाते थे, बल्कि सोने के आयात के लिए लाईसेंस की अनिवार्यता भी थी। इसके चलते बड़ी मात्रा में सोने की तस्करी भी होती थी। हालांकि आधिकारिक तौर पर सोने के आयात कम होते थे, लेकिन देश में सोने का उपभोग लगातार ज्यादा बना रहा। 1981 से 1985 के बीच बहुत कम सोने का आयात हुआ, लेकिन 1986 से 1988 के बीच नियमों में ढील दिए जाने के कारण सोने के आधिकारिक आयात में थोड़ी-बहुत वृद्धि हुई, लेकिन उसके बावजूद 10 से 20 टन ही प्रतिवर्ष सोना आयात होता था। इस ढील का लाभ उठाते हुए 1989 से 1991 के बीच सोने का आधिकारिक आयात 10 से 30 टन वार्षिक हो गया, जबकि सोने की कुल आवक (तस्करी समेत) 200 से 300 टन प्रति वर्ष आंकी गई। 1992 में सरकार ने अनिवासी भारतीयों के लिए आयात स्कीम लागू की और 1993 में बैंकों और नामित एजेंसियों के माध्यम से सोने का आधिकारिक आयात होना शुरू हो गया। इसके चलते तस्करी में भारी गिरावट आई और अब आधिकारिक आयात काफी बड़ी मात्रा में बढ़ गया। 1993 से 1994 के बीच 200 टन सोने का आयात हुआ और 1995 से 1997 के बीच यह 400 से 500 टन तक पहुंच गया। और उसके बाद सोने का आयात सामान्यत: 600 से 900 टन वार्षिक तक रहा, जबकि कई वर्षों में तो यह 1000 टन तक पहुंच गया। बढ़ते आयातों के मद्देनजर 2012-13 तक आते-आते सोने पर आयात नियंत्रण वापस आए और न केवल आयात शुल्क बढ़ाया गया, बल्कि बैंकों पर सोने के आयात को लेकर कई नियंत्रण लगा दिए गए। आयातकों पर यह शर्त लगाई गई कि अपने कुल सोने के आयात का उन्हें कम से कम 20 प्रतिशत पुनर्निर्यात करना होगा। कोरोना महामारी के दौरान थोड़े समय के लिए सोने का आयात थमा, लेकिन उसके उपरांत उसमें और ज्यादा तेजी आ गई। 2021 के बाद सोने का आयात तो बढ़ ही रहा था, लेकिन 2024 में आयात शुल्क घटाए जाने के बाद 2025-26 तक यह 72 अरब डालर तक पहुंच गया। हालांकि मात्रा की दृष्टि से 2025-26 में 2024-25 की तुलना में कम सोने का आयात हुआ, लेकिन सोने की कीमतों में अभूतपूर्व वृद्धि के चलते डालरों में सोने का आयात पिछले साल की तुलना में ज्यादा हो गया।

-डा. अश्वनी महाजन

लीक से हटकर विचार करने की जरूरत

समझा जा सकता है कि सोने के बढ़ते आयातों के चलते आज भारत के विदेशी मुद्रा भंडारों पर दबाव पड़ना शुरू हो गया है। परंपरागत स्वर्ण आभूषणों के लिए होने के बजाय अब जहां सोने के आयात ज्यादातर निवेश के लिए होने लगे हैं, इसलिए इस बाबत विचार करना जरूरी है कि लोग निवेश के लिए कुछ अलग प्रकार के उपकरणों का उपभोग करें। पूर्व में भौतिक रूप से ही सोना खरीदे जाने की संभावना होती थी, लेकिन अब उसके काफी विकल्प शुरू हो चुके हैं। ईटीएफ उसमें से एक है। गौरतलब है कि देश में विभिन्न प्रकार के ईटीएफ का कुल पूंजीगत मूल्य 1.9 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच चुका है। आज जो भी सोने में निवेश करना चाहे, वो ईटीएफ में पैसा लगा सकता है, और सोने में मूल्य वृद्धि का लाभ ले सकता है। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) ने 4 मई 2026 को एक नए ट्रेडिंग सेगमेंट के तौर पर इलेक्ट्रॉनिक गोल्ड रसीद (ईजीआर) की शुरुआत की है। यह भारत के विशाल और परंपरा-आधारित सोने के बाजार को आधुनिक बनाने और औपचारिक रूप देने की दिशा में एक अहम कदम है।

जहां ईटीएफ को स्टॉक मार्केट में केवल रुपए में बेचा या खरीदा जा सकता है, वहीं इलेक्ट्रॉनिक गोल्ड को कभी भी भौतिक सोने के रूप में बदला जा सकता है। स्टॉक मार्केट में इस प्रकार के उत्पाद आने के कारण अब भौतिक सोने की खरीदी कर निवेश करने के दूसरे विकल्प सामने आ रहे हैं, जिससे सोने के आयात की प्रवृत्ति थोड़ी कम हो सकती है। हालांकि भौतिक सोने की खरीद के कुछ नए विकल्प बाजार में उपलब्ध हो रहे हैं, लेकिन अभी यह व्यवस्था शैशव काल में ही है। लीक से हटकर कुछ नए प्रकार की व्यवस्था के निर्माण की जरूरत है, ताकि लोग भौतिक सोने की खरीद से बचें और उन विकल्पों में निवेश करें, ताकि सोने के मूल्य में वृद्धि का लाभ भी उठाया जा सके और देश में सोने के आयात पर अंकुश भी लग सके।

सूचना

दैनिक सच एक्सप्रेस में प्रदेशभर के 42 जिला प्रतिनिधि व 200 से अधिक तहसील और विकासखण्ड प्रतिनिधि सेवाएं दे रहे हैं। लगभग यह सभी किसी अन्य न्यूज एजेंसी या सोशल मीडिया से भी जुड़े हुए हैं। अखबार के अलावा किसी अन्य प्लेटफार्म पर इनकी टिप्पणी या समाचार को दैनिक सच एक्सप्रेस से जोड़कर न देखा जाए।

प्रबंध सम्पादक

सात्विक जीवन की राह जैसे गंगा का प्रवाह

जीवन समाधान

महाराज वैभव भटेले
(धर्म, अध्यात्म एवं राष्ट्रीयता के ओजस्वी वक्ता)
Mobile No. 9303139229

पुराण प्रमाण के अनुसार मानव देह देवदुर्लभ है और यह जीवन अनमोल है। लेकिन ऐसा तभी सम्भव है जब इस जीवन को सत्यनिष्ठा श्रेष्ठचरित्र तथा मन कर्म वचन की पवित्रता पूर्वक जिया जाय। तब तो गर्व के साथ यह कहा जा सकता है कि सात्विक जीवन की राह जैसे गंगा का प्रवाह! चाहे सुख समृद्धि की आकांक्षा हो अथवा सत्ता सम्मान प्राप्ति का लक्ष्य। यह सब सादा जीवन उच्च विचार के सूत्र में बंधकर ही सम्भव हो सकता है। जो अपनी निजता सहजता सौम्यता शौर्यता और साहस नहीं खोते वो अपने मनुष्यत्व के हेतू को सिद्ध कर देते हैं। जो सहजता से प्राप्त है उसमें ही संतोष है। ऐसा भाव ही व्यक्ति को बहुत ऊंचाई तक जाने का साहस देता है। चाहे कर्मक्षेत्र हो या भक्ति का मार्ग अपने लक्ष्य और इष्ट से ध्यान नहीं हटना चाहिए। बहुत बार ऐसा होता है जब व्यक्ति सांसारिक सुख प्राप्त कराने वाली वस्तुओं की प्राप्ति के जतन में इतने उलझ जाते हैं कि वे भगवद भक्ति का मार्ग ही भूल जाते हैं। असल में मनोवांछित की प्राप्ति न होने पर क्रोध उत्पन्न होता है जो कि हमारे समस्त सदकर्मों को पुजा प्रार्थना और भक्ति को बाधित कर देता है। अब यह तो स्वाभाविक सी बात है भक्ति में बाधा यानी न मिले कृष्ण और न ही राधा। इसलिए विशेषकर जो भक्तिमार्गी हैं और भगवान को पा लेना ही जिनका लक्ष्य है वे गंगा के पवित्र प्रवाह की तरह अपने विचार व्यवहार कर्म और पुजा को पवित्र बनाएं। जीवन में सामजिक व्यवहार तो रखें लेकिन प्रतिक्रियाओं से परहेज करें। हो सकता है सामने वाला आपसे कपटपूर्ण व्यवहार करे। लेकिन उसे कोई प्रतिक्रिया मत दो यह सब अपने इष्ट पर छोड़ दो। ताकि सात्विकता बरकरार रहे। जैसे पवित्र गंगा की कल कल धार बहे। जिसमें जो भी आए गोता लगाए और अपने जीवन को धन्य बनाएं।

सच वाणी

सभी आलेख लेखकों के अपने विचार हैं।
दैनिक सच एक्सप्रेस सभी विषयों पर तटस्थ था, है और रहेगा।

3 साल बाद आई परमा एकादशी, व्रत रखने से 100 यज्ञों के समान मिलेगा पुण्य

हिंदू धर्म में एकादशी का बहुत ही विशेष महत्व है। हिंदू पंचांग के मुताबिक हर माह के शुक्ल और कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि पर यह व्रत रखा जाता है। साल में सामान्यत: कुल 24 एकादशी पड़ती है लेकिन साल 2026 में अधिकमास (पुरुषोत्तम मास) के दुर्लभ संयोग के कारण कुल 26 एकादशी पड़ रही हैं। इन्हीं में से एक परमा एकादशी है। परमा एकादशी का व्रत हर 3 साल में एक बार अधिकमास में रखा जाता है। परमा का अर्थ श्रेष्ठ या सर्वोत्तम होता है। ऐसी धार्मिक मान्यता है कि परमा एकादशी के दिन भागवान विष्णु, माता लक्ष्मी की आराधना करने और व्रत रखने से समस्त पापों से मुक्ति मिलती है और 100 यज्ञों के समान पुण्य प्राप्त होता है। परमा एकादशी का व्रत रखने से धन-संपदा में वृद्धि होती है। व्रत करने वाला भक्त सभी सुखों को भोगकर अंत में मोक्ष को प्राप्त करता है। परमा एकादशी का व्रत करने से व्यक्ति को अनजाने में किए गए पापों से मुक्ति मिलती है।

सनातन धर्म में भगवान विष्णु की उपासना का विशेष महत्व माना गया है और इसके लिए गुरुवार, एकादशी तिथि और अधिक मास को अत्यंत पवित्र और फलदायी समय माना जाता है। जब ये तीनों शुभ योग एक साथ बनते हैं, तो इसका धार्मिक महत्व कई गुना बढ़ जाता है। इस वर्ष ज्येष्ठ अधिक मास के कृष्ण पक्ष में ऐसा ही दुर्लभ संयोग बन रहा है, जब परमा एकादशी गुरुवार के दिन पड़ रही है। श्रीहरि को समर्पित यह विशेष दिन साधकों के लिए अत्यंत शुभ अवसर लेकर आता है। मान्यता है कि इस दिन श्रद्धा और नियमों के साथ व्रत और पूजा करने से जीवन की अनेक बाधाएं दूर होती हैं और मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

परम एकादशी कब है?

अगर शुभ मुहूर्त की बात करें तो एकादशी तिथि 11 जून को रात 12:57 बजे प्रारंभ होकर उसी दिन रात 10:36 बजे तक रहेगी। चूंकि यह तिथि अधिक मास में आ रही है, इसलिए व्रत 11 जून को ही रखा जाएगा। व्रत का पारण अगले दिन यानी 12 जून को सुबह 5:23 बजे से 8:10 बजे के बीच करना श्रेष्ठ माना गया है। इस समय का ध्यान रखते हुए व्रत का समापन करना चाहिए ताकि पूर्ण फल प्राप्त हो सके।

परमा एकादशी व्रत के निमय

परमा एकादशी का व्रत रखने वाले भक्तों को इसके नियमों का पालन एक दिन पहले से ही शुरू कर देना चाहिए।
परंपरा के अनुसार दशमी तिथि की शाम से ही अन्न का त्याग करना शुभ माना गया है।

- **एकादशी के दिन प्रात:** काल जल्दी उठकर स्नान करना चाहिए।

यदि संभव हो तो गंगा स्नान करें, अन्यथा घर पर ही स्नान के जल में गंगाजल मिलाकर पवित्र स्नान किया जा सकता है।
इसके बाद स्वच्छ और विशेष रूप से पीले रंग के वस्त्र धारण करना शुभ माना जाता है, जबकि काले रंग से परहेज करना चाहिए।

पूजा विधि

- पूजा के लिए घर के ईशान कोण में एक स्वच्छ स्थान पर पीला वस्त्र बिछाकर भगवान विष्णु की मूर्ति या चित्र स्थापित करें।
- इसके बाद गंगाजल छिड़ककर शुद्धिकरण करें और भगवान को पुष्प, चंदन, धूप, दीप, फल, मिठाई और तुलसी दल अर्पित करें।
- इस दिन व्रत कथा का श्रवण या पाठ करना भी अत्यंत लाभकारी माना गया है।
- अंत में घी का दीपक जलाकर विधिपूर्वक आरती करें।

परमा एकादशी महत्व

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार दान का विशेष महत्व होता है, इसलिए इस दिन यथाशक्ति पीले वस्त्र, फल, मिठाई, चना दाल और गुड़ का दान करना पुण्यदायी माना जाता है। साथ ही, विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करने से जीवन के कष्ट दूर होते हैं और सुख-समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है। इस दिन तुलसी जी की विशेष पूजा भी करनी चाहिए।

सर्वार्थ सिद्धि योग और शोभन योग

हिंदू पंचांग के अनुसार ज्येष्ठ माह के अधिक मास महीने के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि 11 जून को प्रारंभ हो रहा है। ऐसी स्थिति में उदया तिथि के अनुसार परमा एकादशी का व्रत 11 जून दिन गुरुवार को रखा जाएगा। इस दिन कई शुभ योग का निर्माण भी हो रहा है, जिसमें सर्वार्थ सिद्धि योग और शोभन योग भी बन रहा है। जो शुभ कार्य के लिए बेहद शुभ माना जाता है।

सुबह के नियम (एकादशी का दिन)

स्नान और संकल्प: सूर्योदय से पहले उठकर स्नान करें और स्वच्छ कपड़े (संभव हो तो पीले वस्त्र) पहनें। हाथ में जल लेकर व्रत का संकल्प करें।

सूर्य देव को अर्घ्य: तांबे के लोटे से सूर्य देव को जल अर्पित करें।

दिनभर के नियम

- **मंत्र जाप:** दिनभर मन ही मन ऊं नमो भगवते वासुदेवाय महामंत्र का जाप करते रहें।

तो निराहार या फलाहार व्रत रखें)।

विशेष दान (परमा एकादशी के लिए)

चूंकि यह अधिकमास की एकादशी है, इसलिए पूजा के बाद अपनी सामर्थ्य के अनुसार अन्न, वस्त्र, पीले फल, या क्षमतानुसार दान जरूर निकालें।

व्रत का पारण (अगले दिन - द्वादशी तिथि)

द्वादशी के दिन सुबह जल्दी स्नान करके पुन: विष्णु जी की पूजा करें।
किसी ब्राह्मण या जरूरतमंद को भोजन कराएं या दान-दक्षिणा दें।
इसके बाद शुभ मुहूर्त में स्वयं भोजन करके व्रत खोलें (पारण करें)।

वर्ग पहेली 2780

AMRITA NANDANWAR Mob 09822568532

बायें से दायें:- 1) बहुत, 4) अनुचित, 6) सेविका; नर्स, 9) जिस समय, 11) रोगी, 12) हाथ का पंजा, 13) उस समय, 15) मुख, 16) पूरना, 18) कमल, 20) उपाय, 21) आप का, 23) बदनामी, 25) नज़र बचाकर निकल जाना, 28) सामान्य, 29) सिव्योचित.

ऊपर से नीचे:- 1) शासनहीनता, 2) तपस्या, 3) थापा; फ़ॉर्मेट, 4) चौकी, 5) याज्ञिक; यज्ञकर्ता, 7) पूस, 8) नाता, 10) बढ़ती; वृद्धि, 11) देखनेवाला; एक बाजा, 14) भेदभावहीनता; समानता, 15) खातिरदारी, 17) दोज़खी, 19) चुड़ैल, 22) मूर्ख, 24) मोम-बत्ती, 25) डोंडी; बिना खिला फूल, 26) रहस्य, 27) अनेक.

(उत्तर: अगले अंक में)

पिछली पहेली का उत्तर

सचएक्सप्रेस पंचांग

ज्योतिषाचार्य श्रीमती सुषमा शंकरलाल पुरोहित
मो: 8823008303

शुक्रवार 12 जून 2026

सूर्योदय-	प्रात: 5:30 बजे
सूर्यास्त-	शाम 6:54 बजे
चंद्रोदय	- 2:45
चंद्रास्त -	4:22
शक संवत् -	1948 पराभाव
विक्रम संवत -	208,3 रोद्र

पूर्णिमांत महीना- ज्येष्ठ
पक्ष - कृष्ण
तिथि - द्वादशी अपराह्न 4:05 तक पश्चात् त्रयोदशी
नक्षत्र - भरणी रात्रि 1:45 तक पश्चात् कृतिका
योग - अतिगण्ड रात्रि 9:35 तक पश्चात् सुकर्मा
करण - कौलव सुबह 9:15 तक पश्चात् तैतिल
सूर्य राशि - वृष
चंद्र राशि - मेष

शुभांक 1-9-2

मेष

रूके हुए कार्य करने का दिन। पारिवारिक रिश्तों में मजबूती। आर्थिक समृद्धि। शिवजी को गुड़हल का फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 2, शुभ रंग - लाल।

वृष

जीवन को संतुलित रखने में सक्षम। परिवार में खुशियां बरसेंगी। मन मस्तिष्क ऊर्जावान। शिवजी को सफेद फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 6, शुभ रंग - सफेद।

मिथुन

अपनी प्रतिभा को निखारने का वक्त। परिवार में आपसी रिश्तों में गहरापन। रचनात्मक कार्य करने का मन होगा, जिससे मन मस्तिष्क तरोताजा होगा। शिवजी को लाल गुलाब अर्पित करें। शुभ अंक - 2, शुभ रंग- हरा।

कर्क

भावनात्मक रूप से अच्छा वातावरण। आपसी रिश्तों में मजबूती। किसी पर भरोसा आंख मूंद कर न करें। शिवजी को सफेद फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 1, शुभ रंग- सफेद।

सिंह

दिन शुभ। वाणी पर नियंत्रण आवश्यक। अन्यथा बनते काम बिगड़ सकतें हैं। खान पान का ध्यान रखें। शिवजी को लाल फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 5, शुभ रंग- लाल।

कन्या

दिन उत्तम। गोचरीय ग्रह अच्छी स्थिति में। योजनाबद्ध तरीके से काम करें। नौकरीपेशा वर्ग के कार्य क्षेत्र में परिवर्तन के योग। शिवजी को नीले फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 6, शुभ रंग- हरा।

तुला

दिन शुभ अनुकूल। आलस्य को त्याग कर योजना के अनुसार काम करें। व्यापारी वर्ग के लिए सामान्य दिन परिवार का वातावरण सुखद। शिवजी को सफेद फूल अर्पित करें। शुभ अंक - 5, शुभ रंग- सफ़ेद।

वृश्चिक

दिन सामान्य। आलस्य की वजह से काम में बाधाएं बन सकती है। व्यापारी वर्ग थोड़ा सजगता से काम लेवे। नौकरीपेशा जातकों के जीवन में बदलाव सम्भव। शिवजी को लाल फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 6, शुभ रंग- लाल।

धनु

दिन मिश्रित प्रभाव वाला, व्यवसाय की दृष्टि से दिन सामान्य। परिवार में सुख-समृद्धि का वातावरण। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होने के योग। शिव जी को पीले फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 4, शुभ रंग- पीला।

मकर

दिन शुभ। पर व्यापारी वर्ग थोड़ा सतर्क रहें। स्वभाव थोड़ा चिड़चिड़ा, क्रोधी हो सकता है। धैर्य से काम लेवे। शिवजी को नीले फूल अर्पित करें। शुभ अंक- 5, शुभ रंग - जामुनी।

कुंभ

परिवार में पुरानी चली आ रही कुछ गलतफहमीया आज दूर हो सकती है। वैवाहिक जीवन में शुभता। शिवजी को नीले फूल अर्पित करें। शुभ रंग- 9, शुभ रंग- भूरा।

मीन

भाग्य प्रबल। अनावश्यक खर्च हो सकता है। थोड़ा नियंत्रण में रहें। स्वास्थ्य का थोड़ा ध्यान रखें। संतान क्षेत्रीय उत्तम योग। शुभ अंक- 6, शुभ रंग - पीला।

ग्रह स्थिति

वृष राशि में, ता. 15 की रात्रि 8:05 से मिथुन राशि में। मंगल- मेष राशि में,ता. 20 की रात्रि 10:52 से वृष राशि में। बुध- मिथुन राशि में, ता. 22 के दिन 2:20 से कर्क राशि मे, ता. 30 के दिन 12:34 से वक्री। गुरू- मिथुन राशि में ,ता. 2 के दिन 2:01 से कर्क राशि में प्रवेश। शुक्र - मिथुन राशि में, ता.8 के दिन 2:34 से कर्क राशि में। शनि- मीन राशि मे। राहु- कुंभ राशि में। केतु- सिंह राशि में।

दिशा शूल

पश्चिम दिशा में यात्रा वर्जित है। अति आवश्यक होने पर जौ से बनें खाद्य पदार्थ का सेवन कर घर से निकलें।

चौघड़िया

चर प्रात: 6:00-7:30 तक
लाभ सुबह 7:30-9:00 तक
अमृत सुबह 9:00-10:30 तक
शुभ दिन 12:00-1:30 तक
चर अपराह्न 4:30-6:00 तक

अभिजीत मुहूर्त

सुबह 11:55 से दिन 12:20 तक!

सर्वार्थ सिद्धि योग

ता. 5 को सूर्योदय से रात्रि 2:57 तक। ता.9 को सूर्योदय से रात्रि अंत तक। ता . 11 को सूर्योदय से रात्रि 3:03 तक। ता. 15 को सूर्योदय से रात्रि 8:58 तक। ता. 18 को सूर्योदय से अपराह्न 4:33 तक। ता. 21 को दिन 2:37 से रात्रि अंत तक। ता. 26 को रात्रि 8:29 से रात्रि अंत तक।

पुष्य नक्षत्र: ता. 17 को शाम 5:50 ता .18 की शाम 4:33 तक।

त्रिपुष्कर योग - ता.16 को रात्रि 7:20 से रात्रि अंत तक। ता. 21 को दिन 2:37 से रात्रि 8:01 तक।

रवि योग

ता.6 की प्रात: 6:07 से ता. 7 की सुबह 7:55 तक। ता. 17 के दिन 1:41 से ता.18 के दिन 11:32 तक। ता. 20 की प्रात: 5:28 से ता. 22 के दिन 12:36 तक। ता. 24 की प्रात: 5:29 से ता.25 की अपराह्न 4:29 तक। ता. 27 की रात्रि 10:15 से ता. 29 की रात्रि 1:08 तक।

अमृत सिद्धि योग- ता. 15 को सूर्योदय से रात्रि 8:58 तक। ता. 18 को सूर्योदय से अपराह्न 4:33 तक।

द्विपुष्कर योग - ता. 6 को रात्रि 10:12 से रात्रि अंत तक।